।। बिजे इन्दे को संमाद ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ बिजे इन्दे को संमाद लिखंते ||

संत सुखरामजी ने बिजे इन्दे बुझियो

|| छंद व इन्दव ||

गिगन को करे मोल || पवन को करे तोल || रवि को रहावे अडोल ||
हे कोई अेसो नर रे || पत्थर को काते सूत || बांझ को खिलावे पूत ||
धुन मे बोलावे भूत || हे कोई जन रे || बिजली को करे ब्याह ||
दध कूं रखे ठाहा || इनका करे अर्थ || सोई हमारा गुरू रे ||

अर्थ ||

गिगन को अमोल मोल || पवन को नहि रत्ति तोल || बिजली सो ब्रम्ह जाण ||
नाँव उदे होय परणे आण || उलट प्राण चढे देह माँय || सूरज रथ जब थूम्बो जाय ||
दिल पत्थर भजन होय || सूत सोई कत्ते जोय || पंच भूत अे देहे थाय ||
नाड नाड सो बोले आय || बांझ नार सुण सुरत होय || शब्द पूत सो रमे जोय ||
अगम घर जहाँ जाय प्राण । दध कूं मथे सो थुम्बे आण । ये अर्थ या को होय ।
सुण बिजा कहुँ तोय || जाणसी संत जाँके समाय || कयां सु सुख आवे नाय ||
जाय शबद उलट जोय || सर्ब अर्थ या पारख होय ||

कुंडल्यो ||

सुखराम दास अे अर्थ रे || चवड़े किया बजाय || सत्तगुरू मीलिया पाईये ||
सुण बिजा तन मांय || सुण बिजा तन मांय || आप में ता दिन आवे ||
सतगुरू रूपी संत || ताय के चरणा जावे || ओर गुरू दस लाख कर ||
गरज सरे नहीं काय || सुखराम दास अे अर्थ रे || चवड़े किया बजाय || १ ||

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराजने,बिजे इंदा को जबाब दिअे ।

प्रश्न–१– गगन की किमत करो ?

उत्तर–गगन की किमत अनमोल है ।

प्रश्न–२–वायु का वजन करो ?

उत्तर–वायु का रत्तीभर भी वजन नही है ।

प्रश्न–३–सुर्य को न डोलनेवाला अडोल कर देने वाला कोई है क्या ?

उत्तर–समाधी मे संतका प्राण बंकनाल से उलटकर देह मे दसवेद्वार मे चढ जाता है तब सुरज त्रिगुटी मे न डोलनेवाला अडोल हो जाता है ।

प्रश्न–४–ऐसा कोई मनुष्य है क्या जो पत्थर का सूत कातेगा ?

उत्तर–यह मन है,वह पत्थर है,इस मन से राम भजन करना यह पत्थर का सूत कातने जैसा है । पत्थर यानी मन और सूत कातना यानी भजन करना,यही पत्थरका सूत कातना है ।

प्रश्न–५– बांझ स्त्री का पुत्र खेलाओ ?

उत्तर– बांझ स्त्री यह सूरत है और सत शब्द यह उसका पुत्र है । यह सुरत सास पे सुरत शब्द को खेलाती है यही बांझ स्त्री का पुत्र खेलाना है ।

प्रश्न–६– ध्वनी के भूत को बोलने के लिए बाध्य करने वाला कोई संत है क्या ?

उत्तर– यह देह पाँच भूतों की बनी हुयी है । राम नामका भजन करने से संत के देह के नाड़ी नाड़ी से ररंकार की ध्वनी होने लगती है । इस प्रकार से ध्वनी से पाँचो भूत बोलने लगते है । **प्रश्न–**७–बिजली की शादी करो ?

उत्तर–बिजली यह विरह है,राम नामका उदय होता है तब विरहिन रूपी बिजली की शादी हो जाती है ।

प्रश्न –८–दही को स्थान पर रखो ?

उत्तर–प्राण को अगम के घर पहुँचाकर अगम के घर याने ब्रम्हांड में रोकना यही दही को रोकना है । बिजा सुन,मैं तुझे बताता हूँ कि,जिन संतो के अंदर यह हुआ है,हो रहा है,वही इसे जाणेगा । यह कहने व सुनने से,सुख आने वाली कुद्रत नही है । यह कुद्रत जिसे हुयी है,वही संत इसे जाणेंगे । जिसका शब्द उलटकर बंकनाल के रास्ते उपर जायेगा । उसे ही इस सभी अर्थ की परख है ।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि इसका अर्थ मैं तुझे स्पष्ट करके बता दिया । जब तुझे सतगुरू मिलेंगे,तब बिजा,तेरे शरीर के अंदर यह बात दिखेगी । जब तूँ सतगुरु रुपी संत के चरणो में जायेगा,उस दिन तुझे यह सब शरीर के अन्दर ही मिल जायेगा । तूँ सतगुरू के बिना दूसरे दस लाख भी गुरू किए,तो भी सतगुरू के बिना,तेरी गरजपूर्ती नही होने वाली है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज बोले ।

|| इति बिजा इंन्दे को संमाद संपूरण ||